अव्यय

(अविकारी)

अ (नहीं) + व्यय (खर्च)

परिभाषा : जिन शब्दों में लिंग, वचन, काल, कारक के आधार पर कोई विकार (बदलाव) नहीं होता है, उसे अव्यय कहते हैं।

उदा०- यहाँ, वहाँ, लेकिन, परंतु, इसलिए, और, सहित, या, धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी, प्रतिदिन, दिन भर आदि।

→ राम मधुर गाता है।
→ सीता मधुर गाती है।
→ मुस्कीम अचानक आ गया।
→ रेशमा अचानक आ गयी।

अव्यय के भेद → पाँच

(1). क्रिया विशेषण अव्यय
(2). संबंध बोधक अव्यय
(3). समुच्चय बोधक अव्यय
(4). विस्मयादि बोधक अव्यय
} मुख्य भेद
(5). निपात / शौण भेद

(1) क्रिया विशेषण :- क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं।

संज्ञा, सर्वनाम → विशेषण
विशेषण → विशेषण
क्रिया → क्रिया विशेषण

(1) राम अच्छा लिखता है।
(क्रिया विशेषण) (क्रिया)
(2) मोहन तेज दौड़ता है।
(3) कविता खाना अच्छा बनाती है।

क्रिया विशेषण के भेद → (4)

(i) स्थानवाचक/स्थिति वाचक क्रिया विशेषण
(ii) काल (समय) वाचक क्रिया विशेषण
(iii) परिमाण वाचक क्रिया विशेषण
(iv) रीतिवाचक क्रिया विशेषण (ढंग/तरीका)

(1). स्थानवाचक क्रिया विशेषण → क्रिया के स्थान (जगह) का पता चलता है।

उदा०- (1) मनीष अपर चढ़ रहा है।
(2) तोता पेड़ पर बैठा है।
(3) मोहन का घर मेरे दाँए वाली गली में है।
(4) सीमा इधर गयी है।

(2). काल (समय) बोधक क्रिया विशेषण

→ इसके क्रिया के समय का पता चलता है।

उदा०- (1) वह अब पानी पी रहा है।
(2) राम इस समय पढ़ रहा है।
(3) मोहन लगातार मेहनत कर रहा है।
(4) राम आजकल कम दिखाई देता है।

(3). परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

→ इससे क्रिया की मात्रा का बोध होता है।

(1) अभिषेक बहुत खाता है।
(क्रिया)
(क्रिया-विशेषण)
(2) ज्यादा से ज्यादा पानी पियो।
(3) कम मात्रा में भोजन करो।
(4) राम बहुत तेज दौड़ता है।
(5) मोहन कम पढ़ता है।

(4). रीतिवाचक वाचक क्रिया विशेषण → जिन शब्दों से क्रिया करने के ढंग का पता चलता है, वह रीतिवाचक क्रिया विशेषण होते हैं।

→ (ढंग, तरीके, लिहाज)

उदा०- (1) सीता धीरे-धीरे चलती है।
(2) राम ध्यान से पढ़ता है।
(3) रोशनी सही से खाती है।
(4) हिंदी के अध्यापक लिख कर पढ़ाते हैं।
(5) अचानक बादल गरजने लगे।

(2) संबंध बोधक अव्यय –: जो शब्द संज्ञा, सर्वनाम के बाद आते हैं, तथा दूसरे संज्ञा, सर्वनाम से सम्बंध बताते हैं।

उदा०- (1) पेड़ पर बिल्ली बैठी है।
(संज्ञा) (संज्ञा)
(संबंध)
(2) मोहन राधा के संग थूकने गए हैं।
(3) धन के बिना जीवन अधूरा है।
(4) गाँव के बाहर तालाब है।

(3). समुच्चय बोधक अव्यय –: जो अव्यय दो वाक्यों, दो शब्दों को आपस में जोड़ते हैं, समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

उदा०- (1) अमित और सुमित सो रहे हैं।
(2) राम को बहुत समझाया परंतु उसकी समझ में नहीं आया।
(3) दिन निकला और पक्षी चहचहाने लगे।

(4). विस्मयादि बोधक अव्यय –: जिस वाक्य में घृणा, प्रेम, आश्चर्य, अचरज का भाव प्रयोग होता है।

उदा०- (1) भगवान! मेरे दोस्त की रक्षा करो।
(2) वाह! ममी मजा आ गया।
(3) छि: छि: कितना गंदा दृश्य है।
(4) शाबाश! तुम ऐसे ही आगे बढ़ो।

(5) निपात –: गौण भेद
जो शब्द वाक्य में भार डालते हैं।
जैसे- (1) आज मैं ही खाना बनाऊँगा।
(2) किसान दिन भर खेत जोतता रहा।